पूर्व सेना प्रमुख ने किया फिर चुनाव लड़ने का एलान विक्रमसिंघे को राष्ट्रपति पद के लिए देंगे टक्कर

कोलंबो ।
श्रीलंका में जल्द राष्ट्रपति चुनाव होने वाले हैं। इसी को लेकर अब बड़ी खबर सामने आई है। पूर्व सेना प्रमुख फील्ड मार्शल सरथ फोनसेका ने एलान किया कि वह भी राष्ट्रपति चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने औपचारिक रूप से आगामी राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की। कौन हैं फोनसेका फोनसेका श्रीलंका की सेना के 18वें कमांडर थे और उनकी अगुवाई में 2009 में लिट्टे की हार के बाद तीन दशक से चल रहा गृह युद्ध समाप्त हुआ था। वह कुछ समय के लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ भी रहे। सेना से जनरल के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने 2010 के राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे के खिलाफ चुनाव लड़कर आम विपक्षी उम्मीदवार के रूप में राजनीति में प्रवेश किया। हालांकि, तब उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा था। बता दें, श्रीलंका में राष्ट्रपति चुनाव 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के बीच होंगे। चुनाव की तारीख की घोषणा की जाएगी। हमें दिवालियापन की ओर धकेल दिया: फोनसेका इस बीच, फोनसेका ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, मैं देश के लोगों के समक्ष राष्ट्रपति पद के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करना चाहता हूं। उन्होंने आगे कहा कि 76 सालों तक हम एक अयोग्य राजनीतिक समूह के नेतृत्व में रहे हैं, जिसने हमें दिवालियापन की ओर धकेल दिया। श्रीलंका के विकास के लिए हमें भ्रष्टाचार को कुचलने की जरूरत है। हमें आय सृजन को बढ़ावा देने के लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों का लाभ उठाने की आवश्यकता है। यह 2024 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए श्रीलंका के राष्ट्रपति उम्मीदवार के रूप में मेरी औपचारिक और आधिकारिक घोषणा है। 73 साल के पूर्व सेना प्रमुख ने कहा कि वह भी श्रीलंकाई लोगों को द्वीप को भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र बनाने के लिए आगे बढ़ने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। यह लोग भी चुनावी मैदान में फील्ड मार्शल सरथ फोनसेका के अलावा, न्याय मंत्री विजयदास राजपक्षे ने भी चुनाव के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की। उन्होंने कहा कि वह मंत्री पद पर बने रहेंगे। मगर यह चुनाव देश के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होगा। वहीं, राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे भी फिर से चुनाव लड़ेंगे।

न्यूज ब्रीफ

वियनतियाने पहुंचे जयशंकर, आसियान की बैठक में भाग लेंगे; अन्य देशों के समकक्षों से भी कर सकते हैं मुलाकात

वियनतियाने (लाओस) । विदेश मंत्री एस. जयशंकर आसियान बैठक के लिए लाओस की राजधानी वियनतियाने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि वह दक्षिण पूर्वी राष्ट्रों के संगठन के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए उत्सुक हैं। जयशंकर ने कहा कि भारत अपनी एक्ट ईस्ट नीति के 10 साल पूरे कर रहा है। जयशंकर को लाओस के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री सेलुमक्से कोमासिथ ने आसियान-भारत, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) और आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) के प्रारूप में आसियान ढांचे के तहत विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। विदेश मंत्री ने एक्स पर लिखा, आसियान की बैठकों के लिए लाओस के वियनतियाने पहुंच गया हूं। हम आसियान के साथ भारत के संबंधों को और मजबूत करने के लिए उत्सुक हैं, क्योंक हम एक्ट ईस्ट नीति का एक दशक पूरा कर रहे हैं। विदेश मंत्रालय (एमईए) ने उनकी यात्रा से पहले एक बयान में कहा, यह दौरा आसियान केंद्रित क्षेत्रीय वास्तुकला, आसियान एकता, हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर आसियान आउटलुक (एओआईपी) और आसियान-भारत की व्यापक रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए भारत की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एमईए ने कहा, इस दौरे का खास महत्व है, क्योंकि भारत अपनी एक्ट ईस्ट नीति के दस साल पूरे कर रहा है। इसकी घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2014 में नौवें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में की थी। अपने दौरे के दौरान जयशंकर आसियान से जुड़ी बैठकों के दौरान वियनतियाने में अन्य देशों के अपने समकक्षों के साथ भी द्विपक्षीय बैठकें कर सकते हैं। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के विदेश मंत्री और अमेरिका व चीन जैसे प्रमुख साझेदार देशों के शीर्ष राजनयिक तीन दिवसीय बैठक के लिए यहां एकत्र हुए हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और चीन के विदेश मंत्री वांग यी भी इसमें भाग लेने वालों में शामिल हैं।

बांग्लादेश में चीन के बढ़ते प्रभाव से चिंतित है अमेरिका, चुनाव के बाद हुई हिंसा की भी निंदा की

वॉशिंगटन । अमेरिका ने बांग्लादेश में चीन की उपस्थिति पर चिंता जताई है। एक सांसद का मानना है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के लिए एक व्यापारिक साझेदार के तौर पर शीर्ष पर है। ये सभी देश अमेरिका के रणनीतिक भागीदार भारत के आसपास है। दक्षिण और मध्य एशिया के सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लु ने चेतावनी देते हुए कहा कि बांग्लादेश को इस बात से सावधान रहना चाहिए कि उन्हें जल्दबाजी में जरूरत से ज्यादा विस्तार नहीं करना चाहिए। उन्होंने चुनाव के बाद से बांग्लादेश में जारी हिंसा की भी निंदा की। अमेरिकी सांसद में दक्षिण और मध्य एशिया के सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लु ने कहा, हम बांग्लादेश में बढ़ते चीनी प्रभाव से चिंतित हैं। मैं कहना चाहूंगा कि बांग्लादेश को इस बात से सतर्क रहना चाहिए कि उन्हें जल्दबाजी में जरूरत से ज्यादा विस्तार नहीं करना चाहिए। अमेरिकी सांसद बिल कीटिंग ने जब पूछा, रूस के संदर्भ में, उस क्षेत्र में बांग्लादेश में चीन का प्रभाव है, क्या आपने इसमें भी कोई चिंताजनक चीज देखी इस सवाल का जवाब देते हुए लु ने कहा, मैं कहना चाहता हूं कि बांग्लादेश में जिन देशों का प्रभाव सबसे अधिक है, उनमें रूस या चीन नहीं, बल्कि भारत है। हम बांग्लादेश में अपनी नीतियों को लेकर भारत के साथ सक्रिय बातचीत करते हैं। अमेरिकी सांसद यंग किम ने कहा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के लिए एक व्यापारिक साझेदार के तौर पर शीर्ष पर है। ये सभी देश भारत के आसपास है। उन्होंने आगे कहा, भारतीय सीमा और हिंद महासागर में पीएलए की मौजूदगी भी बढ़ रही है। सहायता और सहयोग न केवल दक्षिण एशिया में अमेरिकी हितों को आगे बढ़ाने में, बल्कि उनकी समृद्धि को बढ़ाने और क्षेत्र को स्वतंत्र और खुला रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। चुनाव के बाद हुई हिंसा की भी निंदा की गई एक अन्य अमेरिकी सांसद ने सवाल किया, हाल ही में बांग्लादेश में चुनाव हुए, जिसमें हिंसा की घटनाएं पहली की अपेक्षा बहुत ही कम घटी। इसपर लु ने कहा कि अमेरिका पिछले हफ्ते बांग्लादेश में हुई हिंसा पर बहुत बारीकी से नजर बनाए हुए है। उन्होंने आगे कहा, हमने उस हिंसा की निंदा की और सरकार से बोलने की स्वतंत्रता का सम्मान करने का आह्वान भी किया। आपको मालूम होगा कि यहां कर्फ्यू भी लगाए गए हैं।

सीपीईसी और पाकिस्तान के अत्याचारों के खिलाफ विशाल प्रदर्शन करेंगे बलूच, कार्यकर्ता महरंग का एलान

ग्वादर (बलूचिस्तान) ।
बलूच अधिकार कार्यकर्ताओं ने बलूचिस्तान प्रांत के ग्वादर में एक विशाल सभा और विरोध प्रदर्शन का एलान किया है। बलूच अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाली कार्यकर्ता महरंग बलूच ने 28 जुलाई को आगामी कार्यक्रम की घोषणा की है। उन्होंने इसे बलूच राष्ट्रीय सभा का नाम दिया है। बलूचों का यह प्रदर्शन जिले में चल रहे बलूच नरसंहार और शोषण के खिलाफ हो रहा है।

महरंग बलूच ने एक्स पर लिखा, बलूच राष्ट्रीय सभा बलूचों के नरसंहार, मेगा परियोजनाओं की आड़ में बलूचों के संसाधनों की लूट और सुरक्षा के नाम पर बलूचिस्तान को जेल में बदलने के लिए खिलाफ एक ऐतिहासिक सार्वजनिक जनमत संग्रह होगा। एक शक्तिशाली सार्वजनिक प्रतिरोध की शुरूआत होगी।

सीपीईसी जैसे परियोजनाओं का लोगों को नहीं मिल रहा लाभ

यह एलान ऐसे समय में किया गया है, जब कार्यकर्ता आरोप लगा रहे हैं कि बलूचिस्तान के लोगों का दशकों पुराने औपनिवेशिक शासन की तरह उत्पीड़न किया जा रहा है। यह क्षेत्र अपने प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) जैसी विकास पहल का केंद्र बिंदु रहा है। हालांकि, स्थानीय लोग इन परियोजना का विरोध करते रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें इन परियोजनाओं में कम लाभ मिलता है।

दशकों से अत्याचार और दमन झेल रहा बलूचिस्तानः बलूच एकजुटता समिति

बलूच एकजुटता समिति ने एक्स पर लिखा, बलूचिस्तान ने सात दशकों तक अत्याचार और दमन झेला है। यह औपनिवेशिक शासन की याद दिलाता है। इस भूमि के मूलनिवासी होने के बावजूद बलूच लोग लगातार खतरे में रह रहे हैं। गायब होने और न्यायेतर हत्याओं का सामना कर रहे हैं और आर्थिक रूप से हाशिए पर रह रहे हैं।

बलूच लोगों को नहीं मिल रहीं मूलभूत सुविधाएं

पाकिस्तान सीपीईसी से बलूचिस्तान के विकास का दावा करता है। लेकिन, ग्वादर के निवासियों को बुनियादी सुविधाओं की कमियों का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें चिलचिलाती गर्मी के बीच पीने के साफ पानी और अनियमित बिजली आपूर्ति शामिल है।

समिति ने लोगों से प्रदर्शन में जुटने का किया आह्वान

बलूच एकजुटता समिति ने एक्स पर लिखा, पाकिस्तान की ओर से प्रचारित विकास ने हमारी दुर्दशा को और बढ़ा दिया है। हमारे घरों को जेलों में बदल दिया है। जबकि हमारी पैतृक भूमि का आर्थिक लाभ के लिए शोषण किया जा रहा है। बलूच राष्ट्रीय सभा का मकसद कार्यकर्ताओं को राज्य प्रायोजित दमन और आर्थिक शोषण के खिलाफ व्यापक समर्थन जुटाना है। यह आयोजन न्याय, स्वायत्तता और बलूच अधिकारों की मांग के लिए एक सामूहिक प्रदर्शन है। समिति ने कहा, हम अपने लोगों की पीड़ा और हमारी सांस्कृतिक व आर्थिक विरासत के नुकसान के बीच चुप रहने रहने से इनकार करता हैं। समिति सभी बलूच नागरिकों को उत्पीड़न के खिलाफ एक होकर आंदोलन शुरू करने के लिए ग्वादर में हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करती है।

कमला हैरिस के चुनावी मैदान में आने पर डेमोक्रेट्स में उत्साह भारतवंशी सांसद ने जताई समर्थन की इच्छा

वॉशिंगटन । अमेरिका में पांच नवंबर को राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने हैं। इसके लिए रिपब्लिकन की ओर से डोनाल्ड ट्रंप और डेमोक्रेटिक की तरफ से कमला हैरिस आमने-सामने हैं। भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद राजा कृष्णमूर्ति ने कहा कि भारतवंशी हैरिस को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने के जो बाइडन के फैसले से पार्टी के भीतर ऊर्जा और उत्साह की लहर पैदा हो गई है। अब पार्टी के पास व्हाइट हाउस को फिर से जीतने का अवसर है। चार दिन पहले लिया था बाइडन ने फैसला गौरतलब है, राष्ट्रपति जो बाइडन ने दोबारा चुनाव नहीं लड़ने का फैसला लेकर सबको चौंका दिया था। साथ ही उन्होंने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के नाम का समर्थन किया। इस पूरे मामले पर बाइडन ने सफाई दी। उन्होंने बताया कि पार्टी को एकजुट करने के लिए ऐसा किया। रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप के साथ हुई प्राथमिकी बहस में बाइडन के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद पार्टी में निराशा थी। लगातार विपक्ष की ओर से दबाव बनाया जा रहा था कि राष्ट्रपति बाइडन अपना नाम वापस ले ले। यह काफी रोमांचक सांसद कृष्णमूर्ति ने कहा, यह काफी रोमांचक है। मेरा मतलब है, मैं सोचता हूं कि इसके लिए कोई और शब्द नहीं है। यह काफी रोमांचक है। इस कदम से डेमोक्रेटिक पार्टी ऊर्जा और उत्साह से भर गई है। हैरिस के लिए प्रचार करना चाहते हैं सांसद इलिनोइस से डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसद 51 वर्षीय कृष्णमूर्ति ने कहा कि वह हैरिस के लिए विस्कोन्सिन में प्रचार करना चाहते हैं।

आखिर क्यों जो बाइडन ने लिया अचानक राष्ट्रपति पद की दौड़ से बाहर होने का फैसला, चार दिन बाद बताई वजह

वॉशिंगटन ।
अमेरिका में पांच नवंबर को राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में रिपब्लिकन की ओर से डोनाल्ड ट्रंप, जबकि डेमोक्रेट्स की तरफ से अब कमला हैरिस मैदान में हैं। दोनों प्रतिद्वंद्वी एक दूसरे को कड़ी टक्कर दे रहे हैं। चार दिन पहले यानी जो बाइडन ने चुनावी दौड़ से बाहर होने का एलान कर सबको चौंका दिया था। इसके बाद सवाल उठने लगे थे कि क्या राष्ट्रपति ने रिपब्लिकन के दबाव में आकर यह फैसला लिया है। हालांकि, अब बाइडन ने इस मामले में चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने कहा कि वह इस कार्यालय का सम्मान करते हैं, लेकिन वह अपने देश से अधिक प्यार करते हैं। मैं इस पद का सम्मान... जो बाइडन ने ओवल ऑफिस के ऐतिहासिक संबोधन में दोबारा राष्ट्रपति बनने की अपनी दावेदारी खत्म करने के अपने फैसले के बारे में बताया। उन्होंने कहा, मैं इस पद का सम्मान करता हूं, लेकिन मैं अपने देश से ज्यादा प्यार करता हूं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने पांच नवंबर को दोबारा राष्ट्रपति पद का चुनाव नहीं लड़ने की घोषणा करने और व्हाइट हाउस की दौड़ के लिए उपराष्ट्रपति कमला हैरिस का समर्थन करने के बाद देश के नाम अपने पहले संबोधन में कहा, लोकतंत्र की रक्षा करना किसी भी पद से ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह हमारे लोगों के बारे में उन्होंने आगे कहा, मुझे अमेरिकी लोगों के लिए काम करने से ताकत और खुशी मिलती है। मगर हमारे संघ को परिपूर्ण बनाने का यह कार्य मेरे बारे में नहीं है। यह आपके, आपके परिवार और आपके भविष्य के बारे में है। यह हमारे लोगों के बारे में है। अपने राजनीतिक करियर के अंत को चिह्नित करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि देश का लोकतंत्र मतदाताओं के हाथों में है। 80 वर्षीय नेता ने कहा, दुनिया में कहीं और ऐसा नहीं हो सकता कि स्क्रैंटन, पेनसिल्वेनिया और क्लेमोंट, डेलावेयर में सामान्य रूप से जन्म लेने वाला हकलाने वाला बच्चा एक दिन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में ओवल ऑफिस में बैठे। लेकिन मैं यहां हूं। उन्होंने अमेरिकी लोगों के प्यार और समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने अपना दिल और आत्मा देश को दी है और बदले में उन्हें कई बार आशीर्वाद मिला है। बाइडन नहीं छोड़ेंगे पद ओवल कार्यालय में अपने भाषण में अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन ने कहा कि कार्यकाल के छह महीने बचे हैं।

ट्रंप की हत्या के प्रयास के मामले की होगी जांच, प्रतिनिधि सभा ने दी टास्क फोर्स गठित करने की मंजूरी

वॉशिंगटन।
पेंसिल्वेनिया की रैली में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या की कोशिश की गई। इस कोशिश को लेकर अमेरिकी सदन में प्रस्ताव लाया गया। प्रतिनिधि सभा ने घटना की जांच के लिए समर्पित दो दलीय टास्क फोर्स बनाने के लिए मतदान करने की मांग की। इस टास्क फोर्स के गठन के प्रस्ताव को व्यापक द्विदलीय समर्थन मिला। यह प्रस्ताव 416 मत से पारित हुआ। टास्क फोर्स के गठन की घोषणा सदन के अध्यक्ष माइक जॉनसन और सदन के डेमोक्रेटिक नेता हकीम जेफ्रीज ने संयुक्त रूप से की। इस टास्क फोर्स में से सात रिपब्लिकन नेता और छह डेमोक्रेटिक नेता शामिल होंगे। स्पीकर जॉनसन ने यह भी बताया कि टास्क फोर्स में कौन-कौन शामिल होगा, इसकी जानकारी दी जाएगी। जिसमें जेफ्रीज उनके साथ परामर्श के बाद नामांकन करेंगे। टास्क फोर्स का काम जल्दी कुशलतापूर्वक, प्रभावी ढंग से किया जाए, इसकी मांग अमेरिका की जनता कर रही है। सदन की निगरानी समिति ने घटना से पहले सुरक्षा उल्लंघनों की जांच शुरू कर दी है। बढ़ते दबाव के जवाब में सुरक्षा विफलताओं के बारे में समिति द्वारा व्यापक पूछताछ के बाद सीक्रेट

सर्विसक डायरेक्टर किम्बर्ली चीटल ने भी इस सप्ताह में इस्तीफा दे दिया है। इस मामले की सुनवाई के दौरान पेंसिल्वेनिया राज्य पुलिस आयुक्त की गवाही ने रैली के आसपास की विशिष्ट सुरक्षा में हुई चूक के बारे में जानकारी दी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार एफबीआई निदेशक क्रिस्टोफर रे ने भी गवाही दी, जिसके अनुसार हमलावर ने पिछली राजनीतिक हत्याओं के विवरण की जांच की थी, ट्रंप की हत्या के प्रयास से कुछ समय पहले रैली के पास एक ड्रोन का संचालन किया था। बयान में स्पीकर जॉनसन और नेता जेफ्रीज ने तथ्यों को तेजी से उजागर करने, जवाबदेही सुनिश्चित करने और भविष्य में सुरक्षा विफलताओं को रोकने के लिए टास्क फोर्स की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने टास्क फोर्स के व्यापक जांच दायरे के बारे में बताया।

ईरान के काम आने वाले बेवकूफ.., इजराइल विरोधी प्रदर्शनकारियों को अमेरिकी संसद से नेतन्याहू का संदेश

वॉशिंगटन ।
इजराइल-हमास के बीच पिछले नौ महीनों से जारी जंग के बीच इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अमेरिका दौरे पर हैं। उन्होंने अमेरिका के संसद को संबोधित करते हुए इजराइल के खिलाफ समूहों को फंडिंग और समर्थन देने के लिए ईरान की आलोचना की। नेतन्याहू ने ईरान को निशाने पर लेते हुए कहा कि अपने शत्रुओं को हराने के लिए साहस की जरूरत होती है। अमेरिकी संसद को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, हमें मालूम है कि ईरान इजराइल के खिलाफ प्रदर्शन करने वालों को फंडिंग कर रहा है। ज्यादा नहीं, लेकिन ऐसे कुछ यहां भी हैं और हर राज्य में हैं। मेरे पास इन प्रदर्शनकारियों के लिए एक संदेश है। इन प्रदर्शनकारियों के लिए मेरा संदेश है- जब तेहरान के तानाशाह, जो समलैंगिकों को फांसी देते हैं और अपने बाल न ढकने के लिए महिलाओं की हत्या कर देते हैं, वह आपकी तारीफ करें, आपको फंड दें, तो मतलब है कि आप आधिकारिक तौर पर ईरान के काम आने वाले बेवकूफ बन चुके हैं। नेतन्याहू ने आगे कहा, शानदार, बहुत शानदार। इनमें से कुछ

प्रदर्शनकारियों ने गाजा के लिए समलैंगिंग का नारा लगाते हुए तख्तियां ले रखी है। ये प्रदर्शनकारी नदियों से सागर तक नारे लगा रहे हैं। इनमें से अधिकांश लोगों को यह समझ नहीं आया होगा कि यहां नदी और सागर का क्या मतलब है। वे भूगोल में विफल नहीं होते, वे इतिहास में विफल होते हैं। वे इजराइल को उपनिवेशवादी राज्य कहते हैं। क्या वे नहीं जानते कि इजराइल की भूमि वह है जहां इब्राहिम, इसहाकऔर याकूब ने प्रार्थना की। यहां इसाइया और जेरेमिया ने उपदेश दिया था। यहां दाऊद और सुलैमान ने शासन किया। अमेरिका के कई शहरों में प्रदर्शन कुछ फलस्तीनी समर्थकों ने संसद के पास अमेरिकी झंडे को उतार कर उसे जला दिया। उन्होंने उसके बदले फलस्तीन का झंडा फहरा दिया। यह घटना अमेरिकी संसद के पास यूनियन स्टेशन के पास घटी। सैकड़ों की संख्या में प्रदर्शनकारी मध्य पूर्व में अमेरिकी नीति के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। इस मामले में स्थानीय पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में प्रदर्शनकारियों को हमास के लिए और इजराइल के खिलाफ नारे लगाते हुए देखा गया। उन्होंने एक व्यस्त यूनियन स्टेशन के सामने बड़े से अमेरिकी झंडे को नीचे उतारकर उसे जला दिया। इसके बदले में उन्होंने एक छोड़ा सा फलस्तीनी झंडा फहरा दिया। अमेरिका के कुछ अन्य शहरों में भी प्रदर्शन किए गए। कई लोगों ने इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के खिलाफ भी नारेबाजी की। मौजूदा स्थिति को देखते हुए महत्वपूर्ण सरकारी इमारतों के सामने बैरिगेड लगाया गया। इसमें व्हाइट हाउस और अमेरिका का संसद भवन भी शामिल है।

अमेरिकी संसद में हुआ नेतन्याहू का विरोध, फलस्तीनी मूल की अमेरिकी सांसद ने युद्ध अपराधी लिखी तख्ती दिखाई

वॉशिंगटन/यरुशलम ।
हमास और इजराइल बीते नौ महीने से जंग लड़ रहे हैं। इजराइल द्वारा हमास को खत्म करने का संकल्प गाजा पट्टी के लोगों पर भारी पड़ रहा है। गाजा में पैदा हुई मानवीय परिस्थितियों को लेकर देशभर में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। इस बीच इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अमेरिका के दौरे पर पहुंचे। यहां उन्होंने अमेरिकी संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया। हालांकि, इस दौरान जमकर हंगामा हुआ। नेतन्याहू की गिरफ्तारी की मांग को लेकर हजारों प्रदर्शनकारियों ने कैपिटल बिल्डिंग के आसपास मार्च किया। वहीं, फलस्तीनी मूल की अमेरिकी सांसद राशिदा तलैब ने संसद में इजराइली पीएम के भाषण के दौरान विरोध जताया। उन्होंने युद्ध अपराधी और नरसंहार का दोषी वाली तख्ती दिखाकर विरोध जताया। इस शख्स ने परिवार के 150 सदस्यों को खोया गाजा में इजराइल के हमलों की आलोचक रहीं तलैब का फलस्तीनी हानी अलमाधुन ने भी साथ दिया। तलैब ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज मेरे साथ चैंबर में हानी अलमाधुन भी मौजूद रहे। उन्होंने जंग में अपने परिवार के 150 से अधिक सदस्यों को खो दिया है। अपनी बहन को

पशुओं का चारा खाने के लिए मजबूर होता देख अलमाधुन और उनके परिवार ने भूखे पड़ोसियों का पेट भरने के लिए सूप रसोई शुरू की। उन्होंने आगे लिखा, मैं सच बोलने से पीछे कभी नहीं हटूंगी। इजराइली सरकार फलस्तीनियों के खिलाफ नरसंहार कर रही है। फलस्तीनियों को मिटाया नहीं जा सकेगा।

हजारों लोगों ने किया प्रदर्शन

कैपिटल के बाहर हजारों प्रदर्शनकारियों ने नेतन्याहू की यात्रा के खिलाफ प्रदर्शन किया। पुलिस ने कुछ को मिर्च स्प्रे का इस्तेमाल कर वापस लौटाया। नेतन्याहू के बोलने से पहले प्रतिनिधि सभा के अंदर छह प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जबकि कुछ सांसदों ने इजराइली पीएम का खड़े होकर स्वागत किया। वहीं कुछ ने इस पूरे मामले में दूरी बनाना ही सही समझा। वहीं, अमेरिका के नौ सीनेटरों के साथ ही दर्जनों हाउस सदस्यों ने नेतन्याहू के संबोधन का बहिष्कार करने का एलान किया है, उन्होंने गाजा में इजराइल की कार्रवाई को नेतन्याहू के भाषण से दूर रहने का कारण बताया। संसद से अनुपस्थित रहने वालों में न्यूयॉर्क की अलेक्जेंड्रिया ओकासियो-कोर्टेज, मिशिगन की रशीदा तलीब, सीनेटर बर्नी सैंडर्स और सीनेट की प्रो टेम्पोर पैटी मरे शामिल हैं। वहीं, अन्य लोगों ने भी इजराइली पीएम के संकटग्रस्त नेतृत्व की निंदा की। अमेरिका-इजराइल को एक साथ खड़े होना चाहिए: नेतन्याहू अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए नेतन्याहू ने कहा कि अब जीत हमारे बेहद करीब है। हमास पर हमारी जीत से ईरान को करारा झटका लगेगा। इस दौरान इजराइली पीएम ने हिजबुल्ला को भी कुचलने की धमकी। उन्होंने कहा कि हम अपने लोगों को सुरक्षित रखने के लिए हर जरूरू कदम उठाएंगे। उन्होंने ईरान को अमेरिका और इजराइल के लिए संकट बताया। नेतन्याहू ने कहा कि ऐसे में अमेरिका और इजराइल को एक साथ खड़ा होना चाहिए। जब हम एक साथ खड़े होते हैं तो वास्तव में सब अच्छा होता है। हम जीतते हैं, वे हारते हैं। इस दौरान नेतन्याहू ने गाजा में युद्ध और इससे उत्पन्न मानवीय संकट की निंदा करने वालों की भी आलोचना की। उन्होंने कई प्रदर्शनकारियों पर सात अक्तूबर को हमला करने वाले उग्रवादियों के साथ खड़े होने का भी आरोप लगाया। बेंजामिन ने कहा कि ऐसे लोगों को खुद पर शर्म आनी चाहिए।

नेतन्याहू की यात्रा का विरोध क्यों हो रहा

हमास के साथ इजराइल का युद्ध अमेरिका में एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है। इसके कारण विरोध प्रदर्शन हुए और कॉलेज परिसरों में गिरफ्तारियां हुईं। विरोध की तीव्रता इजराइल प्रधानमंत्री के अमेरिकी दौरे पर और तेज हो गई है। राजधानी वाशिंगटन में हमास के कब्जे में फंसे बंधकों के परिवारों ने प्रदर्शन किया। सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन सुबह को हुआ, जिसमें युद्ध अपराध के आरोपों में नेतन्याहू की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कैपिटल बिल्डिंग के आसपास मार्च किया गया। इसमें कम से कम 5,000 के शामिल होने का अनुमान था।